E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2020; 2(4): 255-258
Received: 20-08-2020
Accepted: 23-09-2020

भुवनेश कुमार परिहार
सहायक आचार्य, हिंदी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय, साँभरलेक,
जयपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
भुवनेश कुमार परिहार
सहायक आचार्य, हिंदी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय, साँभरलेक,
जयपुर, राजस्थान, भारत

हिन्दी ग़ज़ल में समसामयिक चेतना के स्वर

भुवनेश कुमार परिहार

सारांश
हिन्दी ग़ज़ल किसी परिचय की मोहताज नहीं है, वह युगीन चेतना को प्रकट करने में सर्वाधिक सफल साहित्यिक विधा है। यह युगीन दृष्टिकोण को प्रस्तुत करती हुई मानव जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं को ईमानदारी से व्यक्त करती है। किसी भी साहित्य में अपने युग की सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक एवं आर्थिक जड़े देखी जा सकती है। 'समसामयिक' शब्द हिन्दी भाषा में 'समकालीन' शब्द का विशेषण है, जिसका अर्थ है– वर्तमानकालीक या आज के युग की समझ रखना। समकालीन साहित्य चेतना या जागृति का सशक्त माध्यम है। समाज में नये विचार एवं नयी सोच के प्रस्फुटन से ही नयी चेतना का विकास होता है, इसी कारण साहित्य में चेतना का विशेष महत्व है। चेतना के अनेक विषय और क्षेत्र होते हैं, जिनमें प्रमुख क्षेत्र हैं– सामाजिक चेतना, व्यक्तिवादी चेतना, धार्मिक चेतना, नारी चेतना, राष्ट्रीय चेतना, सांस्कृतिक चेतना, राजनीतिक चेतना, आर्थिक चेतना, मानवीय चेतना। हिन्दी ग़ज़ल समृद्ध एवं स्वस्थ समाज के निर्माण की संकल्पना के साथ ही समाज में मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना का सशक्त एवं सार्थक प्रयास कर रही है। आधुनिक भाव बोध एवं समसामयिक संघर्ष चेतना से अभिप्रेत इन ग़ज़लों में वर्तमान भ्रष्ट व्यवस्था के खिलाफ लड़ने एवं संघर्ष करने की प्रेरणा भी अभिव्यक्त है। ये ग़ज़लें आज के संघर्षरत मानव में आशावादी चेतना का प्रसार करती है।

कूटशब्द : संघर्ष, शोषण, पीड़ा, भेदभाव, अत्याचार, दमन, मारपीट, ऊँच–नीच की भावना, छुआछूत, भेदभाव, दलबदल, भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, आपसी सौहार्द, प्रेम, अहिंसा, भाईचारा, सत्य, न्याय, सदाचार, नीति, पवित्रता, परोपकार, आस्था, विश्वास, दया, सहयोग, भाईचारा, विश्वास, समर्पण, वसुधैव कुटुम्बकम ।

प्रस्तावना
साहित्य में समसामयिक विषयों के लेखन के लिए व्यक्ति, समाज, परिवार, परिवेश, धार्मिक, आर्थिक एवं राजनीतिक विषयों की जानकारी होना आवश्यक है। इन्हीं समसामयिक विषयों पर लिखी जा रही हिन्दी ग़ज़ल हमारे शोध का मुख्य विषय है। चेतना शब्द की उत्पत्ति चित् धातु में 'ल्युट' के आगम तथा 'ई' के गुण होने पर स्त्री लिंगार्थक 'आ' लगाने से मानी जाती है। चित् धातु का अर्थ है– प्रत्यक्ष ज्ञान। यह ज्ञानमूलक मनोवृत्ति होती है। चेतना भाव, विचारों, अनुभूतियों और संकल्पों की आनुषंगिक दशा या क्षमता है। यह आत्मकेन्द्रित होती है, जिसके मूल में जागृति एवं स्मृति छिपी होती है। विकिपीड़िया के अनुसार, ''चेतना कुछ जीवधारियों में स्वयं के और अपने आस–पास के वातावरण के तत्त्वों का बोध होने, उन्हे समझने तथा उनकी बातों का मूल्यांकन करने की शक्ति का नाम है। विज्ञान के अनुसार चेतना वह अनुभूति है जो मस्तिष्क में पहुँचने वाले अभिगामी आवेगों से उत्पन्न होती है। इन आवेगों का अर्थ तुरन्त या बाद में लगाया जा सकता है।''[1] चेतना का मूल धर्म जागृति या जागरण है। नयी अनुभूतियों के साथ–साथ यह विकसित होती रहती है। व्यक्ति, परिवार, समाज का मार्गदर्शन करते हुए यह चेतना व्यक्तिगत न होकर समष्टिगत बन जाती है। यह भाव, विचारों, सम्बंधों, अनुभवों का समूह होता है, जिससे वर्ग, समूह या समाज नवीन विचारधारा को ग्रहण करते हुए विकास पथ पर अनवरत आगे बढ़ता रहता है। इसके अन्तर्गत वस्तुओं, विषयों तथा व्यवहारों का प्रत्यक्ष ज्ञान ग्रहण किया जाता है। चेतना के विभिन्न क्षेत्र हैः–

सामाजिक चेतनाः– अन्याय, अनीति, अत्याचार, शोषण, दमन के विरोध स्वरूप सभ्य समाज की स्थापना के उद्देश्य को लेकर जागृत रहती है। इस चेतना के केन्द्र में समाज होता है। समाज का सर्वांगीण विकास ही इसका मुख्य उद्देश्य होता है। समाज से हर विषय जुड़ा होता है, इसीलिए अधिकतर विषय इसी श्रेणी में आते हैं। सामाजिक चेतना एक साथ चलने एवं चिंतन करने में अभिव्यक्त होती है। जनसमूह या आमजन की ज्ञानमूलक मनोवृत्ति ही सामाजिक चेतना कहलाती है। यह चेतना हमें केवल ज्ञान एवं समझ ही नहीं देती अपितु वह हमें सामाजिक उद्देश्यों की पूर्ति करने के लिए जीवन क्षेत्र में अनवरत आगे बढ़ने की प्रेरणा भी देती है। समाज में तीन वर्ग होते हैं– उच्च वर्ग, मध्यम वर्ग और निम्न वर्ग। इन वर्ग के आपसी सम्बंध, स्थिति का ज्ञान हमें सामाजिक चेतना के अन्तर्गत देखने को मिलता है।

साहित्य समाज का दर्पण होता है क्योंकि साहित्यकार समाज के बीच रहकर सामाजिक स्थितियों, घटनाओं को अपने सच्चे अनुभवों के आधार पर साहित्य में व्यक्त करता है। मानव समाज से अलग नहीं रह सकता एवं हम मानव रहित समाज की कल्पना भी नहीं कर सकते। इसीलिए समाज में रहने वाले व्यक्तियों के समाज से सम्बंधित विषयों के अनुभवों का जीवनपयोगी दृष्टिकोण ही सामाजिक चेतना है। इसमें व्यक्ति एवं समाज का अध्ययन होता है। सभ्य समाज की स्थापना ही इसका लक्ष्य होता है। सामाजिक चेतना की उत्पत्ति का मूल कारण सामाजिक विषमतायें, ऊँच–नीच की भावना, छुआछुत, भेदभाव, शोषण, अत्याचार, वैवाहिक समस्याएँ आदि है। समाज में संघर्ष, शोषण, पीड़ा, पक्षधरता व वर्ग संघर्ष से अव्यवस्था एवं अराजकता फैलती है। सामाजिक चेतना को जागृत करके समाज को इन दोषों से दूर किया जा सकता है। समाज में आडम्बरों, दिखावों, रीति–रिवाजों, प्रथाओं, रूढ़ियों, परम्पराओं, अन्धविश्वासों का बोलबाला होने के साथ –साथ नारी एवं दलित वर्ग की स्थिति सही नहीं होने के कारण वर्ग संघर्ष होता है। सामाजिक चेतना के माध्यम से इस संघर्ष को कम किया जा सकता है। इसके समष्टिवादी होने के कारण यह व्यक्ति के बजाय सम्पूर्ण समाज को एक ईकाई के रूप में देखती है। सामाजिक चेतना सम्पूर्ण समाज को एक सूत्र में पिरोने के साथ–साथ 'वसुधैव कुटुम्बकम्'' की भावना साथ लेकर चलती है। इसके अन्तर्गत समाज में भेदभाव, शोषण, अत्याचार, दमन, मारपीट, झगड़े के स्थान पर आपसी सौहार्द, भाईचारा, प्रेम की स्थापना होनी चाहिए। डॉ. कुंअर बैचेन प्रेम व प्यार से अच्छा कोई सांचा नहीं मानते–

''प्यार के सांचे से अच्छा नही सांचा कोई
मोम बनकर इसी सांचे में पिघलते रहिए।''[2]

व्यक्तिवादी चेतनाः– व्यक्ति समाज का प्रमुख अंग होता है एवं समाज के निर्माण में उसका अहम योगदान होता है। यह व्यक्तिवादी चेतना व्यक्ति के भावों एवं विचारों का परिष्कार करते हुए परिवार एवं समाज को समर्पित होती है। इस व्यक्तिवादी चेतना में मनुष्य के हित की कामना की गई है। मनुष्य अपने अस्तित्व, मान–सम्मान, पद, प्रतिष्ठा के लिए जो लड़ाई लड़ता है वह इसी व्यक्तिवादी चेतना के अन्तर्गत आती है। नारी चेतना, दलित चेतना इसी के प्रकार हैं। आज व्यक्ति संकीर्ण, स्वार्थी, मतलबी, मौका परस्त होता जा रहा है। ऐसे व्यक्ति को इनसे ऊपर उठकर परोपकार, दया, अहिंसा की भावना जगाने और उसके हृदय में जीवन के आदर्शों को अपनाने की चेतना ही व्यक्तिवादी चेतना है। व्यक्ति को व्यक्ति से रूबरू करना ही इस व्यक्तिवादी चेतना का लक्ष्य है। व्यक्ति स्वयं में ही कहीं खो गया है, लेकिन व्यक्तिवादी चेतना उसे परिवार, समाज, राष्ट्र के प्रति जागरूक करती है। ग़ज़लकार राजेश रेड्डी की ग़ज़ल (आत्मकथ्य) द्रष्टव्य हैः–

''खुद को बिखरी हुई चीज़ों में ढूँढा, तो मिला
आइने के सारे टूकड़ों को समेटा, तो मिला
ढूँढता फिरता था दुनिया भर में अपने आपको
अपने ही अंदर ज़रा गहरे में उतरा, तो मिला''[3]

नारी चेतनाः– नारी के आत्मसम्मान, स्वाभिमान एवं उत्थान से जुड़े हुए हर पहलू नारी चेतना को व्यक्त करते हैं। पुरातन मान्यताओं एंव सड़ी–गली परम्पराओं के बंधन में जकड़ी हुई नारी को अपने अस्तित्व की पहचान के लिए जो लड़ाई लड़नी पड़ती है, उसके पीछे उसका उत्साह एवं चेतना ही है। नारी की सचेतन स्थिति ही नारी चेतना है। पुत्र–मोह में लोग कन्या को पेट में मार डालते हैं, अर्थात नारी पर जन्म लेने से पहले से ही अत्याचार, दमन, शोषण शुरु हो जाता है। नारी को समाज में सम्मान से जीने और उसके नैतिक विकास व जीवन स्तर ऊपर उठाने के लिए ग़ज़लकार आम जनता में ग़ज़ल के माध्यम से चेतना जाग्रत कर रहे हैं। ग़ज़लकार बल्ली सिंह चीमा ने पद दलित, कमजोर पीड़ित नारी को अपने अधिकारों के लिए संघर्ष का आहवान किया है। इन्होंने अपनी ग़ज़लों में मनुष्य का रूप धारण किये भेड़ियों का उल्लेख किया है, जिनसे हर स्त्री को सावधान रहने की जरूरत हैः–

''भूखी नजरों से घूरने वालो
मैं भी दिल, आंख कान रखती हूँ।
हर तरफ भेड़ियों की आवाजें
खुद को सावधान रखती हूँ
माँ, बहन, बेटी और बहू बनकर
कैसे जीना है ध्यान रखती हूँ।''[4]

धार्मिक चेतनाः– धर्म के आधार पर भेदभाव, झगड़े, अत्याचार, अनाचार, हत्या आदि के विरूद्ध विश्व को एकसूत्र में पिरोने के लिए 'सर्वधर्म समभाव' की जागृति का संदेश देने वाली चेतना 'धार्मिक चेतना' होती है। मानव की चितवृत्तियों के परिष्कार, सुगम व आसान जीवन के लिए ऋषियों एवं महापुरुषों ने अपने–अपने विचारों एवं सिद्धान्तों के माध्यम से धर्म की स्थापना की। धर्म शब्द का अर्थ है– धारण करने योग्य। ऐसी सभी बातें, जिन्हें हमें अपने जीवन में धारण एवं ग्रहण की जानी चाहिए, जिनको हमें अपने चरित्र में उतारना चाहिये, धर्म के अन्तर्गत आती है। सत्य, न्याय, सदाचार, नीति, सदाचरण, पवित्रता, प्रेम, अहिंसा, परोपकार, आस्था, विश्वास इसके प्रमुख अंग है। हिन्दु धर्म, जैन धर्म, इस्लाम धर्म, बौद्ध धर्म, पारसी धर्म, सिक्ख धर्म आदि प्रमुख धर्म है। इन्ही धर्मो में मानवीय मूल्यों के प्रति चेतना प्रकट की गयी है। इन ग़ज़लकारों ने धर्म में इंसान और इंसानीयत को अधिक महत्व दिया है–

''अब तो मज़हब कोई ऐसा भी चलाया जाए
जिसमें इंसान को इंसान बनाया जाए।
जिसकी खुश्बू से महक जाए पड़ोसी का भी घर
फूल इस क़िस्म का हर सिम्त खिलाया जाए।''[5]

सांस्कृतिक चेतनाः– व्यक्ति एवं समाज की प्रगति में संस्कृति का अहम योगदान होता है। हर प्रान्त एवं राष्ट्र की अपनी एक संस्कृति होती है। यह किसी संघ, समुदाय, समूह, जाति, धर्म, परिषद की सम्पत्ति नहीं है। हमारे जातीय संस्कार ही हमारी संस्कृति है। हमारी संस्कृति हमारे अतीत का गौरवगान करती है। इस अतीत एवं संस्कृति से जीवित रखने का कार्य हमारा साहित्य करता है। इस प्रकार तत्कालीन परिस्थितियों का वास्तविक चित्रण करके आने वाली पीढ़ी में अपनी संस्कृति के प्रति सजगता बनाये रखने का महत्वपूर्ण कार्य सांस्कृतिक चेतना करती है। मैथिलीशरण गुप्त जी ने भारत वर्ष की सांस्कृतिक विपन्नता पर गहरी चिन्ता प्रकट करते हुए परमात्मा से सांस्कृतिक जीवन मूल्यों की स्थापना की कामना की है–

''गोपाल अब वह चैन की बंशी बजेगी कब यहाँ
आलस्य से अविभूत हमको कर्मयोग सिखाइये
वह पूर्व की सम्पन्नता यह वर्तमान विपन्नता
अब तो प्रसन्न भविष्य की आशा यहाँ उपजाइये
यह आर्यभूमि सचेत हो फिर कार्यभूमि बने अहा
वह प्रीति–नीति बढ़े परस्पर नीति भाव भगाइये।''[6]

राष्ट्रीय चेतनाः– राष्ट्र का जिम्मेदार नागरिक होने के नाते देश के व्यक्ति का जीवन एवं विचार राष्ट्रीय चेतना से ओत–प्रोत होना चाहिये। व्यक्ति को देश के प्रति सम्मान, संस्कृति का अनुसरण और राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना से युक्त होना चाहिये। देश के नागरिक का प्रथम कर्तव्य जाति, धर्म, सम्प्रदाय, संघ आदि को त्यागकर राष्ट्रीयता से युक्त राष्ट्र के कल्याण की भावना को अपनाना है। देश में अनेकों जाति, धर्म, पंथ, संगठन के लोग राष्ट्र के नाम पर एक सूत्र में बंध जाते हैं। मैथिली शरण गुप्त ने गांधीजी को आदर्श मानकर राष्ट्रीय चेतना की भावना से ओत–प्रोत काव्य लिखा जिसके कारण वे राष्ट्रीय कवि कहलाये। राष्ट्र विकास के लिए राष्ट्रीय चेतना के साथ–साथ भौतिक एवं आध्यात्मिक चेतना का होना भी जरूरी है। एक राष्ट्र में चेतना भरने के लिए व्यक्ति को निजी स्वार्थ का बलिदान करना होता है। उसे निजी हित के बजाय राष्ट्रहित की भावना को ग्रहण करना होता है। इसीलिए दूसरों के हितों को ध्यान में रखकर ही राष्ट्र का हित कर सकते हैं। राष्ट्रीय भावना अपने देश के अगाध प्रेम में, अपनी सभ्यता, संस्कृति, धर्म के प्रति गौरव में, अपने देश की सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक दशाओं के सुधार के प्रयत्न में परिलक्षित होती है। राष्ट्र के प्रति सच्चे एवं ईमानदारी से किया गया समर्पण ही व्यक्ति की राष्ट्रीय चेतना है। ग़ज़लकार दुष्यन्त कुमार की ग़ज़लें राष्ट्र का वास्तविक चित्रण प्रस्तुत करती हैं–

''कल नुमाइश में मिला वो चीथड़े पहने हुए,
मैनें पुछा नाम तो बोला हिंदुस्तान है ।
मुझमें रहते हैं करोड़ो लोग चुप कैसे रहूँ,
हर ग़ज़ल अब सल्तनत के नाम एक बयान है।[7]

आर्थिक चेतनाः– अर्थ मानव जीवन की धूरी माना जाता है, क्योंकि इसके अभाव में उसका जीवन अधूरा है। 'अर्थ' सब कुछ नहीं है, लेकिन बहुत कुछ है। इसी कारण व्यक्ति की आर्थिक सफलता को लोग व्यक्तिगत सफलता मान लेते हैं एवं ऐसे व्यक्ति का स्तर बहुत ऊँचा माना जाता है। भारत में आर्थिक असमानता है, क्योंकि देश के कुछ लोगों की सम्पत्ति शेष लोगों की सम्पत्ति के बराबर है। इस आर्थिक असमानता की खाई को पाटने का कार्य साहित्य कर रहा है। अनेक व्यक्तियों ने अर्थ को ठुकरा कर भी अपना नाम कमाया है। इसी आर्थिक असमानता की गहरी खाई को समाप्त करके मनुष्यों के बीच सौहार्दपूर्ण वातावरण स्थापित करना ही आर्थिक चेतना है। आर्थिक चेतना का प्रबलतम स्वर मार्क्सवादी है क्योंकि इन्होनें ही सर्वप्रथम आर्थिक चेतना सम्बंधी सामाजिक समानता की मांग की। अर्थ के अभाव में आम आदमी का जीना दुश्वार हो गया है, क्योंकि महंगाई बहुत बढ़ गई है। इसी कारण समाज में आर्थिक समानता का होना अति आवश्यक है। इस आर्थिक युग में आम आदमी की स्थिति कुछ इस तरह हैः–

''हम नहीं खाते हमें बाजार खाता है
आजकल अपना यही चीजों से नाता है।
पेट काटा हो गई खासी बचत में
है कहां चेहरा मुखौटा मुस्कराता है।''[8]

राजनीतिक चेतनाः– किसी राज्य के नीति–नियम, विधियाँ तथा जन कल्याणकारी राजनैतिक कार्य का ज्ञान कराने वाली चेतना राजनीतिक चेतना कहलाती है। किसी राष्ट्र की प्रगति उसके राजनैतिक प्रगति से जुड़ी होती है। वर्तमान में नेता राजनीतिक क्षेत्र में स्वार्थ सिद्धि में लगे हुए हैं या स्वार्थ की राजनीति कर रहे हैं। अपने वोट बैंक के लिए ये नेतागण जनता को जाति, धर्म, पंथ या समुदाय के नाम पर लड़वा रहे हैं। राजनीति का प्रमुख कार्य आमजन के हित में राजकीय सत्ता का निर्माण करना है। व्यक्ति के उत्थान एवं समाज के निर्माण के लिए राजनीति का महत्वपूर्ण योगदान होता है। वर्तमान में राजनीति एवं नेताओं पर व्यंग्य करती हुई काफी ग़ज़ले लिखी जा रही हैं। राजनीति के फेर में पड़कर आपसी सम्बंध खराब करने वाली जनता को प्रेम एवं भाईचारा का संदेश देने वाली चेतना राजनीतिक चेतना ही है। डॉ. अदम गोंडवी ने दलबदल, भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी आदि के खिलाफ आम जनता में ग़ज़ल के माध्यम से चेतना प्रकट करते हैं–

''पैसे से आप चाहें तो सरकार गिरा दें
संसद बदल गई है यहाँ की नख़ाश में।
जनता के पास एक ही चारा है बग़ावत
यह बात कह रहा हूँ मैं होशाहवास में।''[9]

मानवीय चेतनाः– मानवीय चेतना मनुष्य को मानवता, इंसानीयत, ईमान और आदर्श से रूबरू करवाती है। मानवीय चेतना स्वार्थ में डुबे हुए व्यक्ति को प्रेम, परोपकार, दया, सहयोग, भाईचारा, विश्वास, समर्पण, अहिंसा आदि जीवन मूल्यों को अपने जीवन में ग्रहण करने की प्रेरणा देती है। आज का व्यक्ति मानवीय चेतना के अभाव में जातिय, धार्मिक– साम्प्रदायिक हिंसा का शिकार हो रहा है। वर्तमान युग में मनुष्य को गरीबी, बेकारी, भुखमरी, महंगाई, भ्रष्टाचार, शोषण, अहंकार, स्वार्थपन, विलासिता आदि ने संवेदना शून्य बना दिया है। व्यक्ति स्वयं के जीवन को दुसरों के जीवन से जोड़कर देखता है तभी वह सच्चे अर्थो में मानव कहलाने योग्य है। एक व्यक्ति को अन्य व्यक्तियों के प्रति मानवता एवं मानवीय जीवन–मूल्यों, आदर्शो की शिक्षा प्रदान करने वाली चेतना ''मानवीय चेतना'' होती है। पूंजीवादी युग में मनुष्य अर्थ के पीछे सब कुछ खोता जा रहा है। आस्था, प्रेम, परोपकार, स्नेह भाव आदि मानवीय मूल्य मनुष्य की स्वार्थ भावना के आगे समाप्त हो रहे है। समकालीन युग में व्यक्ति एवं व्यक्ति के मध्य टूटते रिश्तों, प्रेम–सम्बंधो को फिर से जोड़ने का प्रयास ग़ज़लकार कर रहे है। आज के युग में मानवता के अंत और मानवीय मूल्यों के ह्यास एवं क्षरण की स्थिति चिंताजनक है। हिन्दी ग़ज़लकारों ने मानव में मानवीय चेतना जागृत करने का प्रयास किया है ताकि मनुष्य आपस में प्रेम, स्नेह, भाईचारे से जीवन यापन कर सके–

''जिसमें इन्सान के दिल की न हो धड़कन 'नीरज'
शायरी तो है वह अखबार के कतरन की तरह''[10]

निष्कर्षः

इस प्रकार हम देखते हैं कि चेतना के माध्यम से हम विभिन्न क्षेत्रों में जागरूक एवं सजग रहते है। चेतना भविष्योन्मुखी एवं सकारात्मक होती है। पं. विधानिवास मिश्र के अनुसार, ''साहित्य की चेतना किसी कुर्सी, गद्दी या सम्प्रदाय से बंधी हुई नही है, खास तौर से आज के जमाने में।''[11] साहित्य समाज का दर्पण होता है क्योंकि वह समाज का यथार्थ चित्रण करता है। समाज में अन्याय का विरोध तथा भलाई, अच्छाई का समर्थन करना ही हमारी चेतना है। इसीलिए मनुष्य के केन्द्र में उसकी चेतना ही होती है। हिन्दी ग़ज़ल ने समसामयिक विषयों को आत्मसात करते हुए भारतीय समाज एवं परिवेश की जटिलताओं का चेतनापरक यथार्थवादी चित्रण किया है। समकालीन हिन्दी ग़ज़ल में रोमानियत के साथ प्रगतिवादी दृष्टिकोण एवं चेतनापरक अभिव्यक्ति है। इन ग़ज़लों में सामाजिक विद्रुपताओं एवं बुराईयों के स्थान पर सामाजिक एवं नैतिक मानवीय जीवन मूल्यों की स्थापना पर जोर दिया गया है। समकालीन हिन्दी ग़ज़ल मानव जीवन के हर पहलू को पूर्ण सच्चाई एवं ईमानदारी से व्यक्त

करती है। इन ग़ज़लों में वर्तमान समाज की विसंगतियों, विद्रुपताओं एवं विडम्बनाओं के यथार्थ चित्रण के साथ ही आम आदमी के संघर्षमय जीवन की सहज अभिव्यक्ति है। हिन्दी ग़ज़लें हताश मनुष्य को जीवन में गतिशील रहने का संदेश देती हुई सामाजिक परिवर्तन का आह्वान करती है। इन हिन्दी ग़ज़लों में समसामयिक चेतना के स्वर अभिव्यक्त हैः–

''आज यह दीवार परदों की तरह हिलने लगी,
शर्त लेकिन थी कि ये बुनियाद हिलनी चाहिए।
सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।
मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही,
हो कहीं आग, लेकिन आग जलनी चाहिए।''[12]

सन्दर्भ

1. hi.wikipedia.org से
2. गोपालदास 'नीरज', 'हिन्दी के लोकप्रिय ग़ज़लकार', हिन्द पॉकेट बुक्स, जोरबाग लेन, नई दिल्ली, पृ. सं. 43
3. संपादक गौरीनाथ, 'हिन्दी की चुनिंदा ग़ज़लें', अंतिका प्रकाशन, गाजियाबाद (उ.प्र.) पृ. सं. 56
4. डॉ. रोहिताश अस्थाना, 'हिन्दी ग़ज़ल : उद्भव और विकास', सुनील साहित्य सदन, दरियागंज, नई दिल्ली, पृ. सं. 340
5. शेरजंग गर्ग, 'हिन्दी ग़ज़ल शतक', किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. सं. 25
6. रवीन्द्र कालिया, 'हिन्दी की बेहतरीन ग़ज़लें', भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. सं. 16
7. दुष्यन्त कुमार, 'साये में धूप', राधा–कृष्ण प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, पृ. सं. 57
8. सरदार मुजावर, 'हिन्दी ग़ज़ल का वर्तमान दशक', वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, पृ. सं. 26
9. अदम गोंडवी, 'समय से मुठभेड़', वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, पृ. सं. 71
10. गोपालदास 'नीरज', 'कारवाँ गुजर गया', हिन्द पॉकेट बुक्स, जोरबाग लेन, नई दिल्ली, पृ. सं. 147
11. पं. विद्यानिवास मिश्र, 'साहित्य की चेतना', विंध्याचल प्रकाशन, छतरपुर, मध्य प्रदेश, वक्तव्य से उद्धृत
12. दुष्यन्त कुमार, 'साये में धूप', राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, पृ. सं. 30